"किशोरावस्था के विद्यार्थियों के भविश्यपरक संघर्श, आदतों और सामाजिकता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन"

पंकज शर्मा, शोधार्थी, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर (राज॰)।

शोध निर्देशक–डॉ॰ देवेन्द्र कुमार, लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर (राज॰)।

डॉ. लक्ष्मण सिहं लॉर्ड्स विश्वविद्यालय, चिकानी, अलवर।

प्रस्तावनाः– शिक्षा शब्द संस्कृत की शिक्ष् धातु से बना है और इसका अर्थ है सीखना। सीखने की प्रक्रिया शिक्षक, छात्र तथा पाठ्यक्रम द्वारा सम्पादित होती है। अंग्रेजी भाषा का शब्द एजुकेशन लैटिन भाषा के एडूकेयर ;म्कनबंतमद्ध एवं एवं एडूसीयर ;म्कनबमतमद्ध से बना है जिसका अर्थ है नेतृत्व देना, बाहर लाना। आधुनिक समय में 'शिक्षा' शब्द का प्रयोग अनेक अर्थो में किया जाता है। उसके एक मुख्य अर्थ का उल्लेख करते हुए 'डगलस व हौलैण्ड' ने लिखा है– शिक्षा शब्द का प्रयोग उन सब परिवर्तनों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है, जो एक व्यक्ति में उसके जीवन काल में होते है। शिक्षा और मनोविज्ञान को जोडने वाली कड़ी है 'मानव व्यवहार' मनोविज्ञान ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारीपारिवारिक एवं व्यावहारिक परिवर्तन किए हैं शिक्षा के क्षेत्र में लगे लोगों की धारणाओं को तोड़ा है नवीन अवधारणाओं को विकसित किया है जिससे प्रभावित बालक के विकास में निम्न योगदान उजागर हुए है।

किशोरावस्थाः– किशोरावस्था वह समय है जिसमें किशोर अपने को व्यस्क समझता है और व्यस्क उसे बालक समझते है। व्यसंधि की इस अवस्था में किशोर अनेक बुराइयों में पड जाता है। सामान्यतः बालकों की किशोरावस्था लगभग 13 वर्ष की आयु में और बालिकाओं की लगभग 12 वर्ष की आयु में आरम्भ होती है। भारत में यह आयु पश्चिम के ठण्डे देशों की अपेक्षा एक वर्ष पहले आरम्भ हो जाती है। किशोरावस्था को दबाव तनाव एवं तूफान की अवस्था माना गया है। इस अवस्था की विशेषताओं को एक शब्द 'परिवर्तन' ;बिंदहमद्ध में व्यक्त किया जा सकता है। बिग व हण्ट के शब्दों में 'किशोरावस्था की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप में व्यक्त करने वाला एक शब्द है– परिवर्तन। परिवर्तन– शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक होता है।

भविश्यपरक संघर्श :– भविश्यपरक संघर्श से तात्पर्य बालक के भविष्य की दिशा को चयमित करने से सम्बन्धित है। जिसके साथ वह अपने भविष्य में प्राप्त होने वाले लक्ष्य का निर्धारण कर उससे सम्बन्धित उद्देश्यों का निर्माण करते हैं।एक व्यक्ति अपने जीवन में बहुत मेहनत और संघर्ष के साथ कुछ हासिल करता है यदि मेहनत और संघर्ष उसे सफलता तक पहुंचाते हैं। किशोरावस्था का विद्यार्थी अपने जीवन को सफल बनाने के लिए इस दिशा में एक नवीन कदम प्रेषित करता है जिसके कारण वह अपने आने वाले जीवन को सही एवं सुचाक रूप प्रदान कर सकें। वह दिन–प्रतिदिन इस दिशा को निश्चित कर प्रयास करना प्रारम्भ कर देता है।

"भविश्यपरक संघर्ष निर्माण से तात्पर्य व्यक्ति के अपने जीवन शैली निर्धारण कर उसे व्यावसायिक दृष्टि प्रदान करने से है जिसमें व्यक्ति अपनी सफलता का दर्शन करना चाहता है।"

पारसन्स (1991)

आदत :– अमेरिकन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी के 1903 के एक पेपर ने मनोविज्ञान के **दृष्टिकोण** से आदत को परिभाशित किया आदत एक मानसिक अनुभव के पिछले दोहरान के माध्यम से सीखने, सोचने या

महसूस करने का निश्चित तरीका आदतन व्यवहार अक्सर इसे प्रदर्शित करने वाले लोगों द्वारा अनदेखा कर दिया जाता है क्योंकी किसी व्यक्ति को नियमित कार्यों को करते समय आत्म विश्लेशण में संलग्न होने की आवश्यकता नही होती है। आदतें कभी कभी अनिवार्य होती है। आदत शोधकर्ता वेंडी वुड और उनके सहयोगियों द्वारा 2002 में किए गए दैनिक अनुभव के अध्ययन में पाया गया कि लगभग 43% दैनिक व्यवहार आदत से बाहर किए जाते है। आदत निर्माण की प्रक्रिया के माध्यम से नए व्यवहार स्वचालित हो सकते है। पुरानी आदतों को तोडना मुश्किल है और नई आदतों को बनाना मुश्किल है क्योंकि मनुष्य द्वारा दोहराए जाने वाले व्यवहार श्रृंखला या अनुक्रम तंत्रिका मार्गों में अंकित हो जाते हैं लेकिन दोहराव के माध्यम से नई आदतें बनाना संभव हैं जब व्यवहार को लगातार संदर्भ मे दोहराया जाता है तो संदर्भ और कार्यवाही के बीच संबंध में वृद्धिशील वृद्धि होती है। इससे उस संदर्भ में व्यवहार की स्वचालिता बढ जाती है।

गिलिलेण्ड के अनुसार – ''आदत वह अर्जित अनुभव है जो व्यवहार परिवर्तन से आती है, अधिगम की प्रक्रिया से यह परिवर्तन आते हैं।''

सामाजिकता :– परिवार के बाद विद्यालय तथा विद्यालय के बाद समाज ही एक ऐसी संस्था है जहाँ हमें विकास के अवसर प्राप्त होते है ये विकास क्रिया मुख्य रूप से सामाजिक घटको को दर्शाती है अतः इसे सामाजिक विकास की दिशा माना जाता है। इस दिशा के अनुरूप होने वाले व्यवहार को ही सामाजिक व्यवहार कहा जाता है अर्थात् सामाजिक व्यवहार कैसा है यह बालक की परिपक्वता पर निर्भर करता है। विद्यार्थी में सामाजिकता का विकास करने के लिए उसके पारिवारिक, सामाजिक, भावात्मक एवं आर्थिक कारक मुख्य भूमिका अदा करते हैं। जिनके द्वारा बालक की वास्तविक परिपक्वता तथा सामाजिकता का ज्ञान होता है।
"सामाजिक परिपक्वता समाज में सफल व्यवहार प्रदर्शन की क्रिया है।"

ळववइमे श्2002

शैक्षिक उपलब्धि :– शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले कक्षा कक्षों की क्रिया होती है। जो विद्यार्थी द्वारा पूरे सत्र में अधिगम की जाती है। शैक्षिक उपलब्धि को कक्षा कक्ष का वातावरण, पारिवारिक, आर्थिक स्तर, धार्मिक स्थिति, पारिवारिक, **उत्कंठा**, भय, माता–पिता का अपने बच्चों के प्रति व्यवहार, किशोरावस्था, बाल्यावस्था, आदि घटक प्रभावित करते है।
चार्ल्स ई स्किनर के अनुसार :– "शैक्षिक कार्य प्रक्रिया का अंतिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है, जो विद्याथियों को कार्य के बारे में अंतिम जानकारी प्रदान करता हैं।''
शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थी द्वारा अधिगम किए गए एवं प्रयोग में लाये ज्ञान को मापने का सवौत्तम साधन है। इसके आधार पर ही हम विद्यार्थियों के मध्य अंतर कर सकते है। कि यह बालक प्रतिभाशाली हैं, या सामान्य हैं, या पिछड़ा हैं।

समस्यात्मक पृष्ठभूमि का अधित्यः– किशोरावस्था की आयु काल 12 से 18 वर्ष के मध्य का माना जाता है लेकिन किशोरावस्था का आयु काल पूर्ण रूप से लिंग, जलवायु, प्रजाति और व्यक्ति के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। किशोरावस्था में मानसिक विकास की तीव्रता के कारण बालक तर्क करना प्रारम्भ कर देता है। इस अवस्था में प्रत्यक्षीकरण और ध्यान केन्द्रित करने की शक्ति का विलास होता है। इस उम्र में रचनात्मक प्रवृति का विकास हो जाता है। इस काल में बालक सामाजिक और पारिवारिक व्यवहार के लिए अपनी भावनाओ का दमन और संवेगों पर नियंत्रण स्थापित करना सीख जाता है। **वैलेन्टाइन** ने किशोरावस्था को अपराध प्रवृति के विकास का नाजुक समय कहा है। सामाजिक समूहों की सदस्यता बालकों में सद्भावना, सहानुभूति और उत्साह जैसे सामाजिक गुणों का विकास करती है। इससे बालको में अच्छी आदतों, रुचियों

एवं जीवन दर्शन का निर्माण होता हैं। वह अपने कर्तव्य व उत्तरदायित्व को समझने लगता है और समाज के साथ अनुकूलन स्थापित कर लेता है। जिस समय किशोर असमंजस की स्थिति में होता है तो उसके माता–पिता अभिभावक एवं शिक्षकों को चाहिए कि वह उसका उचित मार्गदर्शन करें। विद्यालय मे उचित सामाजिक परिस्थितियाँ पैदा कर बच्चे का विकास किया जा सकता है। इन सब किशोरावस्था के लक्षणों के आधार पर ही प्रस्तुत शोध समस्या "किशोरावस्था के विद्यार्थियों के कैरियर संघर्ष, अध्ययन आदत और सामाजिक परिपक्वता पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव का अध्ययन" का चयन किया गया है। अतः वर्तमान में यह शोध समस्या औचित्य पूर्ण है।

शोध उद्देश्यः– मोजर तथा काल्टन ने शोध के वर्णनात्मक तथा व्याख्यात्मक प्रयोजन पर अधिक बल दिया है। यद्यपि शोध की प्रगतिशील प्रद्धति के संदर्भ में इसके उद्देश्यों की परिधि सीमित नही है। किन्तु सामान्यतः सामाजिक शोध के विभिन्न उद्देश्य निम्नांकित हो सकते हैः–

1. किशोरावस्था के राजकीय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों के कैरियर संघर्ष का अध्ययन करना।
2. किशोरावस्था के राजकीय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत का अध्ययन करना।
3. किशोरावस्था के राजकीय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता का अध्ययन करना।
4. किशोरावस्था के राजकीय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
5. किशोरावस्था के राजकीय व निजी विद्यार्थियों के कैरियर संघर्ष, अध्ययन आदत, सामाजिक परिपक्वता व शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाः–

1. किशोरावस्था पर राजकिय व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के कैरियर संघर्ष के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।
2. किशोरावस्था पर राजकिय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।
3. किशोरावस्था पर राजकिय व निजि विद्यालय के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।
4. किशोरावस्था पर राजकिय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।
5. किशोरावस्था, के राजकिय व निजी विद्यालय के विद्यार्थियों पर कैरियर संघर्ष, अध्ययन आदत, सामाजिक परिपक्वता य शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया जाता है।

तकनीकि शब्द :– किसी भी शोध प्रकरण या समस्या के अन्तर्गत कुछ शब्दों की व्याख्या करता है।जिनके ऊपर सम्पूर्ण शोध कार्य निर्भर करता है।

किशोरावस्थाः– बाल्यावस्था के समापन अर्थात् 13 वर्ष की आयु से किशोरावस्था आरम्भ होती है। इस अवस्था को तुफान एवं संवेगों की अवस्था कहा गया है। हैडो कमेटी की रिपोर्ट में कहा गया है – 11 – 12 वर्ष की आयु में बालक की नसों मे ज्वार उठना आरम्भ होता है, इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है।

हरलॉक के अनुसार ''किशोरावस्था आँधी और तनाव की अवस्था है।''

विद्यार्थीः– 'विद्यालय रूपी भवन में किसी भी कक्षा के अन्तर्गत किसी भी आयु का बालक जो अध्ययन करता है शिक्षा प्राप्त करता है और शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करता है विद्यार्थी कहलाता है।'

भविश्यपरक संघर्श – जब व्यक्ति को कैरियर के लिए विरोधी विचारों, इच्छाओं, उद्देश्यों आदि का सामना करना पडता है तो इससे मस्तिश्क में संघर्श प्रारम्भ हो जाता है, इसे भविश्यपरक संघर्श कहते है।

आदतः– आदत से अभिप्रायः विद्यार्थी का किसी विषय पर रुचिपूर्ण अध्ययन करने के लिए प्रवृत रहने से है। जिसके लिए विद्यार्थी को बाध्य नहीं किया जाता है वह स्वयं अपनी इच्छा के अनुरूप अध्ययन करने के लिए तत्पर रहता है।'

सामाजिकता :– सामाजिक परिपक्वता से अभिप्रायः बालक के उस व्यवहार से है जो वह समाज के अन्तर्गत, समाज में रहने वाले व्यक्तियों के प्रति, समाज में हिं रहने वाले लोगो द्वारा किया जाता है।'

शैक्षिक उपलब्धिः– शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थी के शैक्षिक स्तर के आकलन से है जिसके द्वारा उसकी शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धि का अध्ययन किया जाता है।

प्रभावः– प्रभाव एक स्थिति को दूसरी स्थिति के मध्य सम्बन्ध या तुलना को दर्शाने वाला माध्यम है जो कभी सकारात्मक तो कभी नकारात्मक रूप में प्रदर्शित होता है।'

अध्ययनः– किसी विषय का ज्ञान या जानकरी प्राप्त करने के लिए किया जाने वाला प्रयास हैं जो एकल या सामूहिक, कहा के अन्तर्गत या कक्षा के बाहर, औपचारिक या अनपचारिक किसी भी स्थिति में हो सकता है।

शोध चरः– शैक्षिक या मनोवैज्ञानिक गुण को मापन की प्रक्रिया द्वारा परिमाण में बदल लिया जाए जब उसे चर कहते हैं। चरों को दो रूपों में विभाजित किया जाता है ।

1. सतत् चर (ब्वदजपदनवने टंतपंइसमे)

2. आश्रित चर (क्पेबतमजम टंतपंइसम)

शोध न्यादर्श :– न्यादर्श विशाल समग्र से लिए गए लोगों का एक अंश होता है। यह समग्र का प्रतिनिधिक लक्ष्य होगा जब इसमें समग्र की सभी मूल विशेषताएँ होगी जिससे यह लिया गया है। अतः प्रतिदर्शन में हमारा सम्बन्ध इस बात हो नहीं होता कि किस प्रकार की इकाइयों का साक्षात्कार/अवलोकन किया जायेगा बल्कि इस बात से होता है कि किस विशेष वर्णन की कितनी इकाइयों है और उनका चयन किस विधि से किया जाना है। न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया है जिसमें अलवर शहर के 20 राजकीय तथा निजि विद्यालयों के क्रमशः 300, 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। न्यादर्श विधि सम्भाव्य न्यादर्श से निर्धारित की गई है।

शोध परिसीमन :– शोध परिसीमन से अभिप्रायरू शोध को एक निश्चित सीमा में बाधकर रखना हैं जिससे एक पूर्ण विषय पर ध्यान केन्द्रित कर शोधकर्ता अपना अध्ययन कार्य कर सकें। जिसके होने से शोधकर्ता अपने समय, एवं श्रम को एक निश्चित दिशा मे अग्रसर कर सकें। परिसीमन के अभाव में शोधकर्ता भटकाव की स्थिति में जा सकता है।

1. प्रस्तुत शोध कार्य को केवल 'अलवर' जिले तक सीमित रखा गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य को राजकीय एवं निजी केवल उच्च माध्यमिक स्तर तक सीमित रखा गया है।

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन में केवल 12–18 वर्ष के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य में केवल '600' विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
5. प्रस्तुत शोध कार्य को किशोरावस्था के कैरियर सघर्ष, अध्ययन आहत तथा सामाजिक परिपक्वता तक सीमित रखा गया है।

संबंधित साहित्य का महत्व :– सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अन्वेशणकर्त्ता को नवीनतम् ज्ञान के ि ाखर पर ले जाता है जहाँ उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निश्कर्शो एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा उसे यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र के कहाँ रिक्तियाँ है। कहाँ निश्कर्श में विरोध है, कहाँ अनुसंधान की पुनः आव यकता है। जब उसे दूसरे अनुसंधानकर्त्ताओं के अनुसंधान कार्य की जाँच एवं मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तो उसे बहुत सी अनुसंधान विधियों, बहुत से तथ्यों, सिद्धान्तों संकल्पनाओं एवं सन्दर्भ ग्रन्थों का ज्ञान होता है जो उसके स्वयं के अनुसंधान कार्य में उपयोगी सिद्ध होते है।

शोध में प्रयुक्त उपकरणों का विवरण :–

कैरियर संघर्ष :क्त. ।दममज ज्ञनउंत ंमस त्मींजी द्वारा निर्मित।

अध्ययन आदतें :– एस. मुखोपाध्याय और डी. एन.सनसनवाल द्वारा निर्मित का प्रयोग किया गया है।

सामाजिक परिपक्वता : डॉ. ए. के. पी. सिन्हा तथा डॉ.आर. पी. सिंह द्वारा निर्मित।

शैक्षिक उपलब्धि : किशोरावस्था के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने हेतु बालकों के कक्षा '10' के परिणामों को आधार बनाया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी विधि :– सांख्यिकी एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक पद्धति है। इस पद्धति की सहायता से मूर्त और अमूर्त तथ्यो को अंकात्मक रूप दिया जाता द्य सांख्यिकी का उपयोग शोध करने तथा नवीन तथ्यों की खोज करने में एक उपकरण के रूप में होता है। इसलिए सांख्यिकी का उपयोग रुचिकर तथा मूल्यवान है। यह किसी भी क्षेत्प के वर्णन को अधिक सुक्ष्म बना देती है। यदि हम व्यक्तियों एवं समूहों की विभिन्नता में रुचि रखते हैं तो सांख्यिकी विधियाँ प्रेक्षित विमिश्रताओ के विश्वसनीय वर्णन एवं मूल्याकंन में सहायता देती है। प्रस्तुत शोध कार्यमें निम्न सांख्यिकरी का प्रयोग किया जा रहा है।

1. मध्यमान (डमंद)
2. सह–सम्बंध (ब्व.तमसंजपवद)
3. टी – परीक्षण (ज.ज्मेज)

शोध निष्कर्ष :–

- सरकारी एवं निजी विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों के कैरियर संघर्ष मे सार्थक अंतर नही पाया जाता है। दोनों वर्गों के कैरियर संघर्ष समान अवस्था पर है। निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि किशोरावस्था पर विद्यार्थियों के कैरियर संघर्ष में समानता पाई गई है।

- किशोरावस्था पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओ कि अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। निस्कर्ष मे हम कह सकते हैं कि किशोरावस्था पर निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अध्ययन आदत समान पाई गई है।
- किशोरावस्था पर सरकारी एवं निजी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं की सामाजिक परिपक्वता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। निष्कर्ष में हम कह सकते हैं कि किशोरावस्था पर निजी विद्यालयो के विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता समान पाई गई है।
- किशोरावस्था पर सरकारी एवं निजी विद्यालयो के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है। निष्कर्ष मे हम कह सकते हैं कि किशोरावस्था पर निजी विद्यालयो के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि समान पाई गई है।
- किशोरावस्था पर कैरियर संघर्ष, अध्ययन आाहत, सामाजिक परिपक्वता व शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही पाया गया है जिसे हम सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओ के मध्य ऊपर वर्णित सभी परिकल्पनाओं के निस्कर्ष स्वरूप दृष्टिगोचर कर चुके हैं।
  निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि किशोरावस्था पर कैरियर संपर्क, अध्ययन आदत, सामाजिक परिपक्वता तथा शौक्षिक उपलब्धि समान रूप से कार्य करती है।

शैक्षिक निहितार्थ :– किसी भी शोध कार्य का उपयोग ही उस शोध कार्य का निहितार्थ कहलाता है जिसके द्वारा उस बोध से भविष्य के लिए कुछ निहितार्थ या महत्वता प्रदान की जाती है।

1. प्रस्तुत शोध कार्य किशोरावस्था से सम्बन्धित समस्त जानकारी प्रदान करने में सक्षम हो सकेगा।
2. प्रस्तुत शोध कार्य द्वारा कैरियर संघर्ष के बारे में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
3. प्रस्तुत शोध कार्य अध्ययन आदतो के मद् में सम्पूर्ण जानकारी प्रदान करने में सक्षम हो सकेगा।
4. प्रस्तुत शोध कार्य सामाजिक परिपक्वता के बारे मे सम्पूर्ण जानकारी प्रदान कर सकेगा।
5. प्रस्तुत शोध कार्य किशोरावस्था के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की समानता से अवगत करा सकेगा।

भावी शोध हेतु सुझाव :–

1. प्रस्तुत शोध कार्य केवल किशोरावस्था पर किया गया है जबकि इसका किसी अन्य अवस्था समूह के साथ तुलनात्मक अध्यायन किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं दोनो पर समान रूप मे किया गया है जबकि इसे छात्र एवं छात्राओं के मध्य तुलना स्तर पर भी किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध कार्य मे किशोरावस्था के कैरियर संघर्ष, अध्ययन आदत, सामाजिक परिपक्वता के प्रभाव का अध्ययन किया गया है जबकि इसके कारणों का अध्ययन भी किया जा सकता है।
4. प्रस्तुत शोध कार्य में किशोरावस्था के आयामों पर शैक्षिक उपलब्धि को आंका गया है जबकि आगे होने वाले शोध कार्यों में मानसिक उपलब्धि का अध्ययन भी किया जा सकता है।

उपसंहार :– मनोवैज्ञानिको ने अपने अध्ययनों से यह सिद्ध किया है कि बालक का विकास सामान्य प्रक्रियाओं से विशेष प्रतिक्रियाँ की ओर होता है। विकास की सब अवस्थाओं में बालक की प्रतिक्रियाँ विशिष्ट बनने से पूर्व सामान्य प्रकार की होती है। लड़के एवं लडकीयों की विकास दरों में अन्तर होता है लडको की तुलना में लड़कियाँ जल्दी परिपक्व हो जाती है। विलास की सभी दशाएं शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक आदि एक–दूसरे से परस्पर सम्बिन्धित है। इनमें से किसी भी एक दिशा में विकास अन्य सभी

दिशाओं में होने वाले विकास को पूरी तरह प्रभावित करने की क्षमता रखता है। वृद्धि और विकास की क्रिया वंशानुक्रम और वातावरण का संयुक्त परिणाम है। बालक की वृद्धि और विकास को किसी स्तर पर वंशानुक्रम और वातावरण का संयुक्त परिणाम है। बालक की वृद्धि और विकास को किसी स्तर पर वंशानुक्रम और वातावरण की संयुक्त माना जाता है।

अतः किशोरावस्था को पूर्णत भित्र अवस्था माना गया है जिसके अन्तर्गत विद्यार्थी सबसे कठिन समायोजन युक्तियों को ग्राह करता है। जिसमें कैरियर संघर्ष, सामाजिक परिपक्वता, अध्ययन आदत तथा शैक्षिक उपलब्धि बहुत ही महत्वपूर्ण आयाम के सन्दर्भ में जानी गयी है। इन्हीं के आधार पर किया गया प्रस्तुत शोध कार्य इनकी समायोजन शक्ति तथाइनके प्रभाव को स्पष्ट करके सफल हुआ है।